समाज विकासमाला

कब्रों का विलाप

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ५२

कब्रों का विलाप

खलील जिब्रान की एक भावपूर्ण कहानी

लेखक
श्रीपाद जोशी

संपादक
यशपाल जैन

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

इस माला में आपने टाल्स्टॉय की 'कितनी ज़मीन' कहानी पढ़ी थी। यह लीजिए दूसरी कहानी। इसके लेखक खलील जिब्रान हैं, जो ऊंचे दर्जे के लेखक थे। उनकी लिखी हुई छोटी-बड़ी कहानियां दिल को हिला देती हैं और उनके लेख मन पर गहरा असर करते हैं।

यह कहानी हमें सोचने के लिए मजबूर करती है। अपनी आंखों से जो हम देखते हैं, वह ऊपरी चीज है। असलियत समझने के लिए जरा गहरा देखने की जरूरत होती है।

यह कहानी खलील जिब्रान की मशहूर कहानियों में से है। आप देखेंगे कि हमारी बुराइयों पर इसमें कितनी गहरी चोट की गई है।

—संपादक

कब्रों का विलाप

अमीर इंसाफ की गद्दी पर बैठा था। उसके दाएं-बाएं मुल्क के आलिम बैठे थे। उनके चढ़े हुए चेहरों पर किताबों के ज्ञान की छाया खेल रही थी। आस-पास सिपाही तलवारें और नेजे उठाये खड़े थे। सामने लोग यह देखने को इकट्ठे थे कि किस अपराधी को क्या दंड मिलता है। सबकी गर्दनें झुकी हुई थीं। आंखों में बेबसी झलक रही थी और सांस रुकी हुई थी, मानो अमीर की आंखों में कोई ऐसी ताकत थी, जो उनके दिलों पर डर और रोब गालिब कर रही थी।

अमीर ने हाथ उठाया और चिल्लाकर कहा, "मुलजिमों को एक-एक करके मेरे सामने हाजिर करो और बताओ कि उनमें से किसने क्या कसूर किया है?"

कैदखाने का दरवाजा खोल दिया गया और काली दीवारें नजर आने लगीं।

जंजीरों की झंकार सुनाई देने लगी। उसके साथ

कैदियों की आहें और रोना-पीटना भी मिला हुआ था। लोग गर्दनें उठा-उठाकर उनकी तरफ देखने लगे, मानो उस कब्र की गहराई से निकली हुई उन मौत की शिकारों पर पहले नजर डालने में वे एक-दूसरे के आगे बढ़ जाना चाहते हों।

थोड़ी देर के बाद कैदखाने से दो सिपाही निकले, जिनके कब्जे में एक नौजवान था। इस नौजवान के हाथों में हथकड़ी थी और उसकी चढ़ी हुई त्यौरी और निडर चेहरे से उसके स्वाभिमान और आत्मिक बल का पता चलता था। उसे सिपाहियों ने अदालत के बीच में खड़ा कर दिया और खुद थोड़ा-सा पीछे हटकर खड़े हो गये। अमीर ने एक क्षण उनकी तरफ घूरकर देखा, फिर सवाल किया, "इस आदमी ने, जो हमारे सामने इस तरह सिर उठाये खड़ा है, जैसे अदालत की जकड़ में न हो, बल्कि किसी ऊंची जगह पर खड़ा हो, क्या जुर्म किया है ?"

अमीर के वजीरों में से एक ने जवाब दिया, "कल एक फौजी अफसर और चंद सिपाही देहात में काम

पर गये थे। इस आदमी ने अफसर को कत्ल कर दिया। सिपाहियों ने इसे गिरफ्तार कर लिया और खून में लथड़ी हुई तलवार कब्जे में कर ली।"

अमीर गुस्से से कांपने लगा। उसकी आंखों से आग की चिनगारियां बरसने लगीं। उसने गरजती हुई आवाज में कहा, "इसे जंजीरों में जकड़ दो और फिर उसी अंधेरी कोठरी में बंद कर दो। कल सुबह इसी-की तलवार से इसकी गर्दन उड़ा दो और इसकी लाश को शहर के बाहर फेंक दो, जिससे गिद्ध और चीलें इसका गोश्त नोंच लें और हवा इसकी बदबू को इसके घरवालों और इसके दोस्तों तक पहुंचा दे।"

नौजवान को वापस कैदखाने की तरफ ले जाया गया। लोगों की दुःखभरी निगाहें उसके पीछे-पीछे गईं, क्योंकि वह अभी कम उम्र था, खूबसूरत था और हट्टा-कट्टा था।

इसके बाद सिपाही एक औरत को लिये कैदखाने से निकले। वह स्त्री बहुत सुंदर और नाजुक थी। उसकी आंखों में रंज और मायूसी का पीलापन झलक

रहा था। उसकी आंखें नीची हो रही थीं और शर्म के मारे उसकी गर्दन झुकी थी।

अमीर ने उसपर निगाह डाली और कहा, "इस औरत ने, जो हमारे सामने ऐसे खड़ी है, जैसे सच के सामने छाया, क्या कसूर किया है?"

वजीर ने उत्तर दिया, "यह औरत कुलटा है। रात को जब इसका खाविंद घर आया तब उसने देखा कि यह अपने एक यार के साथ सोई हुई है। इसका यार डरकर भाग गया और खाविंद ने इसे पुलिस के हवाले कर दिया।"

यह सुनकर अमीर बहुत बिगड़ा। स्त्री शर्म के मारे पानी-पानी हो गई। अमीर ने ऊंची आवाज में कहा, "इसे वापस कैदखाने में ले जाओ और कांटों के बिस्तर पर सुलाओ, ताकि यह उस बिस्तर को याद करे, जिसे इसने अपने पाप से नापाक बनाया और इसे इनार[१] मिला हुआ सिरका[२] पिलाओ, ताकि यह अपने

---

१. कड़ुआ फल।

२. शराब।

घर के खाने को याद करे। सुबह होने पर नंगा करके खींचते और घसीटते हुए शहर के बाहर ले जाओ और संगसार[1] कर दो। इसकी लाश को वहीं पड़ा रहने दो, ताकि भेड़िये इसका गोश्त खा जायं और इसकी हड्डियों को कीड़े-मकोड़े चाट लें।"

उस औरत को फिर कैदखाने की अंधेरी कोठरी में ले जाया गया। लोग उसकी तरफ अफसोस की नजरों से देख रहे थे। वह अमीर के इंसाफ पर खुश थे, लेकिन उन्हें उस स्त्री के सौंदर्य, कोमलता और उसकी दुखी आंखों पर रहम भी आ रहा था।

इसके बाद दो सिपाही अधेड़ उम्र के एक कमजोर आदमी को लिये हुए आए, जो अपने कांपते हुए घुटनों को घसीटता हुआ चलता था। उसने भीड़ की तरफ अकुलाई आंखों से देखा। उसकी आंखों में मायूसी, बरबादी और गरीबी झलक रही थी।

---

१. इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार एक तरह की सजा, जिसमें व्यभिचारी को जमीन में कमर तक गाड़ देते थे और उसके सिर पर पत्थर बरसाकर उसके प्राण लेते थे।

अमीर ने उसपर निगाह डाली और जोश में आकर पूछा, "इस गंदे आदमी ने, जो इस तरह खड़ा है, जैसे जिंदों में मुर्दा, क्या कसूर किया है ?"

वजीर ने जवाब दिया, "यह चोर है। रात के वक्त यह कलीसा[1] में जा घुसा और जोगियों ने इसे पकड़ लिया। इसकी झोली में पूजा के बरतन पाये गयें।"

अमीर ने उसकी तरफ इस तरह देखा, जैसे भूखा गिद्ध पर-कटी चिड़िया की ओर देखता है। चिल्लाकर बोला, "इसे फिर कैदखाने के अंधेरे में फेंक दो और जंजीरों में जकड़ दो। जब सुबह हो जाय तब इसे रेशमी रस्सी से एक ऊंचे पेड़ पर लटका दो और इसी तरह इसे तबतक जमीन और आसमान के बीच लटका रहने दो जबतक इसकी गुनहगार अंगुलियां सड़-गल न जायं और उनकी बदबू चारों तरफ फैल न जाय।"

सिपाही चोर को फिर कैदखाने में ले गये और लोग कानाफूसी करने लगे कि इस मरियल काफ़िर ने

१. गिरजा।

पूजा के बरतन चुराने की हिम्मत कैसे की ?

अमीर गद्दी से उतरा और उसके आलिम व होशियार सलाहकार भी उसके पीछे हो लिये, सिपाही



अमीर गद्दी सेउतरकर जाते हुए

कुछ आगे और कुछ पीछे। लोगों की भीड़ तितर-बितर हो गई और इस तरह वह स्थान खाली हो गया, अलबत्ता कैदियों की आहें और गहरी सांसें सुनाई देती रहीं।

मैं वहां खड़ा इस कानून पर हैरान हो रहा था,

जो इंसान ने इंसान के लिए बनाया है। मैं उस चीज पर गौर कर रहा था, जिसे लोग इंसाफ कहते हैं। सोचते-सोचते मेरे विचार इस तरह गायब हो गये, जिस तरह शाम की लाली धुंधलके में छिप जाती है। मैं उस मकान से निकला। अपने दिल में कहता था कि घास मिट्टी से बढ़ती है, बकरी घास को खा लेती है, भेड़िया बकरी को अपनी खुराक बनाता है, गैंड़ा भेड़िये को खा जाता है और शेर गैंडे को मौत के घाट उतारता है। क्या कोई ऐसी ताकत भी मौजूद है, जो मौत पर छा जाय और जुल्म के इस सिलसिले को ही खत्म कर दे? क्या कोई ऐसी ताकत मौजूद है, जो इन तमाम घिनौनी बातों को अच्छे नतीजे में बदल दे? क्या कोई ऐसी ताकत है, जो जिंदगी की सारी ताकतों को अपने हाथ में ले ले और अपने अंदर जज्ब कर ले—जिस तरह समुद्र सारी नदियों को अपनी गहराइयों में समा लेता है? क्या कोई ऐसी ताकत है, जो कातिल[1] और मकतूल[2]; बुरा काम करनेवाली और

---

१. कत्ल करनेवाला २. जिसका कत्ल किया जाता है।

उसके साथ बुरा काम करनेवाले और चोर व मुद्दई को अमीर के आसन से ज्यादा ऊंचे इंसाफ के आसन के सामने खड़ा कर दे ?

दूसरे दिन मैं शहर से निकलकर खेतों की तरफ गया, ताकि मन को कुछ चैन मिले और जंगल का मनोहर वायुमंडल रंज और मायूसी के उन जंतुओं को मार दे, जो शहर के तंग गली-कूचों और अंधेरे मकानों ने मेरे अंदर पैदा कर दिये थे। मैं जिस वक्त घाटी में पहुंचा तो देखा कि गिद्धों, चीलों और कौवों के झुंड-के-झुंड उड़ रहे हैं और जमीन पर उतर रहे हैं। उनकी आवाजों और परों की फड़फड़ाहट से सारा वातावरण कांप रहा है। मैं जरा आगे बढ़ा तो देखा कि मेरे सामने एक लाश पेड़ से लटक रही है, एक नंगी औरत की बेजान देह उन पत्थरों के ढेर में पड़ी है, जिनसे उसे संगसार किया गया था। उधर एक नौजवान की लाश धूल तथा खून से सनी हुई है और उसका सिर धड़ से जुदा पड़ा है।

मैं वहीं ठहर गया। मेरी आंखों पर एक मोटा

और अंधेरा पर्दा पड़ गया और मुझे कल्पना और मौत के सिवाय, जो खून में सनी उन लाशों पर छाई हुई थी, कुछ भी दिखाई नहीं देता था। बरबादी की पुकार के अलावा मेरे कान कुछ भी नहीं सुनते थे। इस पुकार में कौवों की आवाज भी मिली हुई थी, जो इंसानी कानून के शिकारों के चारों तरफ मंडरा रहे थे।

तीन इंसान कल तक जिंदा थे, आज सुबह मौत के मुंह में चले गये।

तीन आदमियों ने इंसान के अस्तित्व में अपनी प्रतिष्ठा को खो दिया और अंधे कानून ने हाथ बढ़ाकर उन्हें बेदर्दी के साथ पामाल कर दिया।

तीन आदमियों को जेल ने कसूरवार ठहराया, क्योंकि वे कमजोर थे और कानून ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि वह ताकतवर था।

एक आदमी ने दूसरे को कत्ल कर दिया तो वह कातिल (खूनी) ठहरा; लेकिन जब अमीर ने इसे कत्ल करवा दिया तो वह अमीर इंसाफ करनेवाला

समझा गया।

एक शख्स ने पूजा का सामान ले लिया तो लोगों ने उसे चोर कहा, लेकिन जब अमीर ने उसकी जिंदगी छीन ली तो वह अमीर विद्वान ठहरा।

एक औरत ने अपने पति से बेईमानी की तो लोगों ने उसे कुलटा ठहराया, लेकिन जब अमीर ने उसे नंगा करके संगसार करवाया तो वह अमीर शरीफ कहलाया।

खून बहाना हराम है, लेकिन अमीर के लिए यह किसने हलाल कर दिया ?

माल हड़प करना जुर्म है, लेकिन आत्माओं को हड़प करना किसने जायज़ करार दिया ?

औरतों की बेईमानी खराब बात है, लेकिन यह किसने कहा कि खूबसूरत देहों को संगसार करना पाक काम है।

हम छोटी-सी बदमाशी के मुकाबले में बहुत बड़ी बदमाशी करते हैं और कहते हैं कि यह कानून है। हम फ़िसाद का बदला बदतरीन फिसाद से देते हैं और

कहते हैं कि यह शील है। हम एक अपराध का बदला लेने के लिए दूसरा बड़ा अपराध करते हैं और चिल्लाते हैं कि यह इंसाफ है।

क्या अमीर ने कभी अपने दुश्मन को मौत के घाट नहीं उतारा? क्या उसने कभी अपनी प्रजा के किसी कमजोर इंसान का माल हड़प नहीं किया? क्या उसने कभी किसी खूबसूरत औरत की ओर आंख नहीं उठाई? क्या वह इन तमाम जुर्मों से पाक है कि जिससे कातिल की गर्दन उड़ाना, चोर को सूली चढ़ाना और व्यभिचारिणी को संगसार कराना उसके लिए जायज़ हो गया?

वे कौन थे, जिन्होंने चोर को दरख्त से लटकाया? क्या आसमान से फरिश्ते उतरे थे? या वे वही ंसान थे, जो उस माल को, जो उनके हाथ में आ जाता , हड़प लेते हैं?

और उस कातिल का सिर किसने कलम किया था? क्या ऊपर से नबी और पैगंबर आये थे या वे ही सिपाही थे, जो कत्ल और खून करते रहते हैं?

और उस व्यभिचारिणी को किसने संगसार किया था ? क्या उस काम के लिए पाक रूहें अपनी जगहों से आई थीं ? या वे वही लोग थे, जो अंधेरे के पर्दे में बुरे काम किया करते हैं ?

कानून !...कानून क्या चीज है ? उसे आसमान की ऊंचाइयों से सूरज की किरणों के साथ उतरते किसने देखा है ? और किस आदमी ने खुदाई इच्छा को इंसान के दिल से मिलाजुला पाया है ? और किस खान्दान में फरिश्तों ने आकर इंसानों से कहा है कि कमजोरों को जिंदगी की रोशनी से महरूम कर दो, गिरे हुए को तलवार से उड़ा दो और कसूर करनेवाले को फौलादी पांवों के नीचे रौंद डालो।

मेरे दिमाग में यही विचार चक्कर लगा रहे थे और मुझे परेशान कर रहे थे कि इतने में मैंने किसी के पैरों की आहट सुनी। आंख उठाई तो देखा कि एक औरत पेड़ों में से निकलकर लाशों के करीब आ रही है। उसके चेहरे पर खतरे के निशान दिखाई दे रहे थे, मानो वह उस भयावने नज्जारे को देखकर डर

गई हो। वह उस लाश की तरफ बढ़ी, जिसका सिर कटा हुआ था और चीख-चीखकर रोने लगी। अपनी कांपती हुई बांहों से उसने लाश को गले लगाया। उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी। वह अपनी उंगलियां



औरत लाश के बालों पर हाथ फेरते हुए

लाश के बालों पर फेर रही थी। जब थक गई तो उसने अपने हाथों से जमीन खोदना शुरू किया, यहांतक कि एक लंबी-चौड़ी कब्र खोद ली। फिर उसने उस नौजवान की लाश को उठाकर कब्र में रख दिया। उसका कटा हुआ और खून से लथपथ सिर उसके कंधों

पर रख दिया और कब्र को मिट्टी से ढांककर उसके ऊपर उस तलवार के फल को गाड़ दिया, जिससे उसका सिर काटा गया था। इसके बाद उसने आंसू बहाते हुए मुझसे कहा, "अमीर से कह दो कि बजाय इसके कि मैं उस इंसान की लाश को, जिसने मुझे बेइज्जती के कब्जे से छुड़ाया, जंगल के खूंख्वार जानवरों और परिंदों के खाने के लिए छोड़ दूं, मेरे लिए बेहतर है कि मैं मर जाऊं और उस आदमी से जा मिलूं।"

मैंने उससे कहा, "ओ दुखी औरत, मुझसे डरो मत, क्योंकि मैं तुमसे पहले इन मैयतों पर विलाप कर चुका हूं, लेकिन मुझे यह तो बताओ कि इस आदमी ने तुम्हें बेइज्जती के कब्जे से किस तरह बचाया था ?"

उसने टूटती हुई आवाज में जवाब दिया, "अमीर का एक अफसर हमारे खेतों में लगान और जजिया वसूल करने आया था; लेकिन जब उसने मुझे देखा तो वह मुझपर बुरी निगाह डालने लगा। इसके बाद उसने मेरे बाप की तरफ भारी रकम निकाल दी और चूंकि मेरे गरीब बाप यह रकम अदा नहीं कर सकते

थे, उस अफसर ने गुस्से में आकर रुपये के बदले में मुझपर कब्जा कर लिया, इस नीयत से कि मुझे अमीर के महल में पहुंचा दे। मैंने रो-रोकर उससे दया की भीख मांगी, लेकिन उसे रहम न आया। मैंने उससे बाप के बुढ़ापे की तरफ ध्यान देने की मिन्नत की, लेकिन वह न पसीजा। तब मैंने चिल्ला-चिल्लाकर गांववालों को इकट्ठा किया और उनके सामने फरियाद की। उसपर यह नौजवान, जिसके साथ मेरी मंगनी हो चुकी थी, आया और उसने मुझे अफसर के हाथों से छुड़ाया। अफसर ने गुस्से में आकर उसे कत्ल कर देना चाहा, लेकिन नौजवान ने फुर्ती के साथ अपनेको बचाया और दीवार से लटकती हुई पुरानी तलवार खींचकर उसने अपने ऊपर के हमले के जवाब में और मेरे शरीर के बचाव के लिए अफसर को कत्ल कर दिया। इसके बाद वह अपनी इज्जत के लिए मकतूल की लाश के पास ही खड़ा रहा। आखिरकार सिपाहियों ने उसे गिरफ्तार करके कैदखाने में डाल दिया।"

यह कहते-कहते उसने मेरी तरफ दिल को पिघ-

लाने वाली निगाह से देखा, फिर जल्दी से पीठ मोड़-कर चल दी । उसकी दर्दनाक आवाज हवा में गूंजती रही ।

थोड़ी देर के बाद मैंने एक नौजवान को आते देखा, जिसने अपना चेहरा कपड़े से ढांक रखा था । वह व्यभिचारिणी की लाश के पास पहुंचकर रुक गया । उसने अपनी देह का कपड़ा लेकर उससे उस नंगी औरत



नौजवान अपने खंजर से जमीन खोदने लगा ।

को ढांक दिया और अपने खंजर से जमीन खोदने लगा । जब कब्र तैयार होगई तो उसने उस औरत को उसमें दफना दिया । यह काम पूरा हो जाने पर

उसने इधर-उधर से कुछ फूल तोड़कर उनका एक गुलदस्ता बनाया और उस कब्र पर रख दिया। जब वह जाने लगा तो मैंने उसे रोक लिया और कहा, "इस औरत के साथ तुम्हारा क्या ताल्लुक था जो तुमने अमीर की इच्छा के खिलाफ और अपनी जिंदगी खतरे में डालकर इसके लिए इतनी मेहनत की और इसकी देह को कौओं और चीलों की खूराक बनने से बचाया ?"

नौजवान ने मेरी तरफ देखा। उसकी आंखों से मालूम हो रहा था कि वह बहुत रोया-धोया है और उसने सारी रात जागते हुए बिताई है। वह बहुत दुखी और मायूसीभरी आवाज में बोला, "मैं वही बदनसीब आदमी हूं, जिसकी वजह से इस बेचारी को संगसार किया गया। हम एक-दूसरे को तभी से चाहते थे जबकि हम बचपन के दिनों में इकट्ठे खेला करते थे। हम जवान हो गये और हमारी प्रीत भी पूरी तरह उभर आई। एक बार जब मैं शहर चला गया था, लड़की के बाप ने उसकी शादी जबरदस्ती किसी दूसरे

आदमी के साथ कर दी। जब मैं वापस आया और मैंने यह खबर सुनी तो मेरी जिंदगी में अंधेरा छा गया और मुझे जीना दूभर हो गया। मैं अपनी भीतरी इच्छा के साथ बहुत झगड़ता रहा, लेकिन पस्त हो गया। मेरी मुहब्बत मुझे इस तरह लेकर चल दी, जिस तरह आंखोंवाला किसी अंधे को रास्ता दिखाता है। मैं छुपकर उसके घर पर पहुंचा, ताकि उसकी आंखों का नूर देखूं और उसकी आवाज का गीत सुनूं। मैंने उसे अकेली पाया। वह अपनी किस्मत को रो रही थी और अपनी जिंदगी पर अफसोस कर रही थी। मैं उसके पास बैठ गया। हम चैन से बातें करने में मगन हो गये और खुदा देखता है कि हमारे दिल पाक थे। लेकिन जब एक घंटा गुजर गया तो एकाएक उसका खाविंद आगया। उसने मुझे देखा तो वह गुस्से से पागल होगया। उसने अपनी औरत के गले में कपड़ा डालकर शोर मचाना शुरू कर दिया, "लोगो, आओ! और इस औरत और उसके यार को देखो!" अड़ौसी-पड़ौसी जमा होगये और थोड़ी देर में पुलिस-

वाले भी खबर पाकर आ पहुंचे। उस आदमी ने अपनी औरत को पुलिस के सख्त हाथों में दे दिया, जो उसे घसीटते हुए थाने की तरफ ले गये। लेकिन किसीने मुझपर हाथ भी न उठाया, क्योंकि अंधा कानून और गंदी रूढ़ियां औरत का ही पीछा करती हैं, मर्द का तो हर कसूर माफ समझा जाता।"

यह कहानी सुनने के बाद नौजवान अपना मुंह छिपाये शहर की तरफ चल दिया और मुझे उस लाश की तरफ देखते हुए छोड़ गया, जो पेड़ से लटक रही थी और हवा के झोंकों से पेड़ की शाखाओं के साथ हिल रही थी, मानों वह रूहों से दया की मांग कर रही हो और चाहती हो कि उसे नीचे उतारकर जमीन पर इंसानियत के प्रेमियों और मुहब्बत के शहीदों के पहलू में डाल दिया जाय।

एक घंटे के बाद एक दुबली-पतली औरत आ पहुंची, जिसके कपड़े चिथड़े हो रहे थे। वह पेड़ से लटकती हुई लाश के करीब आकर ठहर गई और उसने रो-पीटकर अपने दिल को हलका किया। इसके



औरत पेड़ से लटकती लाश के पास आकर ठहर गई

बाद वह पेड़ पर चढ़ गई और उसने अपने दांतों से रेशमी रस्सी को खोला। लाश गीले कपड़े की तरह जमीन पर आ गई। औरत पेड़ से नीचे उतरी और उसने दो कब्रों के पहलू में तीसरी कब्र खोदी और उसमें लाश को दफन कर दिया। जब वह कब्र पर मिट्टी डाल चुकी तो उसने लकड़ी के दो टुकड़े लेकर उनका सलीब बनाया और उसे कब्र के सिरहाने गाड़ दिया। जब वह जाने लगी तो मैंने बढ़कर सवाल

किया, "ओ औरत, तुम्हें किस बात ने मजबूर किया कि तुम एक चोर को दफन करने के लिए यहां आओ ?"

उसने मेरी तरफ देखा। उसकी निगाहों से परेशानी और बेचैनी के निशान दिखाई दे रहे थे। उसने कहा, "यह मेरा खाविंद, मेरी जिंदगी का साथी और मेरे बच्चों का बाप है। हमारे पांच बच्चे भूखों मर रहे हैं। उनमें सबसे बड़ा आठ साल का है और सबसे छोटा अभी दूध पीता है। मेरा खाविंद चोर न था। वह गिरजाघर की जमीन में खेतीबाड़ी करता था और उसे गिरजाघर के जोगी इतना ही मेहनताना देते थे कि अगर हम शाम को खाना खा लेते तो सुबह के लिए हमारे पास कुछ न बचता। जब मेरा खाविंद जवान था तो वह गिरजाघर के खेतों को अपने पसीने से सींचता था और अपनी बांहों की ताकत से वहां के बागों को हरा-भरा रखता था। लेकिन जब वह बूढ़ा हो गया और जब सालों की मेहनत ने उसकी ताक़त को खत्म कर दिया और बीमारियों ने उसे घेर लिया तो उन्होंने उसे यह कहकर नौकरी से हटा दिया

कि 'गिरजा को अब तुम्हारी जरूरत नहीं है, अब तुम चले जाओ। जब तुम्हारे बेटे जवान हो जायं तो उन्हें यहां भेज देना, ताकि वे तुम्हारी जगह ले लें।' मेरा खाविंद उनके सामने बहुत रोया-धोया। उसने ईसा-मसीह के नाम पर उनसे दया की भीख मांगी और उन्हें फरिश्तों तथा मसीह के साथियों की कसमें दिलाईं; लेकिन उन्होंने दया न की और न उसपर मेहरबानी की, न मुझपर, न हमारे बच्चों पर।

"मेरा खाविंद शहर में गया, ताकि कोई नौकरी ढूंढ़े, लेकिन नाकामयाब होकर लौटा, क्योंकि उन महलों के रहनेवाले सिर्फ जवान आदमियों को नौकर रखते थे। इसके बाद वह सड़क पर बैठ गया, ताकि लोगों से दान या भीख मिले। लेकिन किसीने उसकी तरफ निगाह तक न की। लोग कहते थे कि 'ऐसे इंसान को भीख या खैरात देना मजहब के खिलाफ है।'

"आखिर एक ऐसी रात आ पहुंची, जब कि हमारे बच्चे भूख के मारे जमीन पर तड़प रहे थे। मेरा दुध-मुंहा बच्चा मेरी छाती को चूसता था, लेकिन वहां दूध

कहां था ! यह नजारा देखकर मेरे खाविंद का चेहरा बदल गया। वह अंधेरे के परदे में चुपके से निकला और गिरजाघर के भंडार में पहुंच गया, जहां जोगी और पादरी अनाज और शराब जमा करके रखते हैं। मेरे खाविंद ने अनाज की एक झोली भरकर अपने कंधे पर उठाई और बाहर निकलना चाहा, लेकिन वह कुछ ही गज गया था कि चौकीदार जाग उठे और उन्होंने उस गरीब को पकड़ लिया। उन्होंने उसे गालियां दीं, खूब मारा-पीटा और जब सुबह हुई तो यह कहकर पुलिस के हवाले कर दिया कि 'यह चोर है और गिरजाघर के सोने के बरतन चुराने आया था।'

"पुलिस ने उसे कैदखाने में डाल दिया। उसके बाद इसे पेड़ से लटका दिया गया ताकि गिद्ध इसके गोश्त से अपना पेट भरें। और इसका सबब क्या है? सिर्फ इतना ही कि इसने इस बात की कोशिश की थी कि इसके भूखे बच्चे उस अनाज से अपना पेट भरें, जो इसने अपनी बाजुओं की ताकत से उन दिनों जमा

किया था, जबकि वह गिरजाघर का नौकर था।"

इतना कहकर वह गरीब औरत चली गई, लेकिन उसकी बातों ने सारे वायुमंडल को उदास तथा दुखी बना दिया और ऐसा मालूम होने लगा मानो उसके मुंह से धुएं के बादल निकलकर हवा में दुःख का वातावरण पैदा कर रहे हों।

मैं उन कब्रों के पास खड़ा रहा, जिनकी मिट्टी के जर्रों से फरियादें निकल रही थीं। मैं खड़ा सोच रहा था कि अगर इस खेत के पेड़ों से मेरे दिल की आग की लपट छू जाय तो ये हलचल करने लग जायं और अपनी जगह छोड़कर अमीर और उसके सिपाहियों से जूझ पड़ें और गिरजाघर की दीवारों को तोड़-फोड़कर पादरियों के सिर पर गिरा दें।

मैं उन नई कब्रों की ओर देख रहा था। मेरी निगाह से हमदर्दी की मिठास और दुःख और अफसोस का कडुवापन निकल रहा था।

यह एक नौजवान की कब्र है, जिसने अपनी जिंदगी को एक अबला औरत की इज्जत बचाने के

लिए निछावर कर दिया । इसने उस औरत को भेड़िये के मुंह से छुड़ाया और इस बहादुरी के लिए इसको गर्दन उड़ा दी गई ! उस औरत ने अपने रहवर की कब्र पर तलवार गाड़ दी है, जो इस नौजवान की बहादुरी की तरफ इशारा करती है ।

यह कब्र उस औरत की है, जो मारी जाने से पहले प्रेम की पुतली थी । इसे संगसार किया गया, क्योंकि वह मरते दम तक पाक रही । इसके दोस्त ने इसकी कब्र पर फूलों का गुच्छा रख दिया है, जो प्रीति की सुगंध की तरफ इशारा करता है ।

और यह उस बदनसीब गरीब की कब्र है जिसकी बाजुओं में जबतक ताकत थी तबतक वह गिरजाघर के खेतों में अनाज उगाता रहा, लेकिन जब उसमें ताकत न रही तो उसे निकाल दिया गया । वह काम करके अपने बच्चों का पेट पालना चाहता था, लेकिन उसे काम न मिला । फिर उसने भीख मांगना चाहा, लेकिन किसीने उसे भीख न दी । आखिरकार जब इसकी मायूसी हद से ज्यादा बढ़ गई तो इसने उस

अनाज में से थोड़ा-सा उठाना चाहा, जो इसने अपना खून-पसीना एक करके जमा किया था। इसे पकड़ लिया गया और इसकी जान ले ली गई। इसकी औरत ने इसकी कब्र पर सलीब बना दिया है, ताकि रात के सूनेपन में आसमान के तारे पादरियों के जुल्म को देखें, जो मसीह की सिखावन को फैलाने का दावा तो करते हैं, लेकिन असलियत में तलवारों से दुखियों और कमजोरों की गर्दनें उड़ाते हैं।

सूरज छिप रहा था, मानों वह आदमियों के जुल्म और अत्याचारों से तंग आगया हो और उनसे नफरत करता हो। शाम अपने घूंघट में सारी दुनिया को छिपा रही थी। मैंने आसमान की तरफ देखा और कब्रों के राज़ पर हाथ मलते हुए ऊंची आवाज से कहा, "यह है तुम्हारी तलवार, ऐ बहादुर मर्द, जो जमीन में गड़ी है। ये हैं तुम्हारे फूल, ऐ औरत, जिनसे प्रीति की किरणें निकल रही हैं। और यह है तुम्हारा सलीब, ऐ ईसामसीह, जो रात के अंधेरे में छिप रहा है।"

हमारी दूसरी लोकप्रिय पुस्तकमाला

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

इस माला में संस्कृत-साहित्य के सुप्रसिद्ध ग्रंथ-रत्नों का सार छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिंदी में दिया गया है। पुस्तकों की भाषा सरल और शैली रोचक हैं। अक्षर बड़े हैं।

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुंतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानंद
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावण-वध
२८. सौन्दरनंद

मूल्य प्रत्येक का छः आना।

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना

५१

छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल